IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

विकासषील देषो के आर्थिक प्रगति में बुनियादी ढाँचे के महत्व का अध्ययन

षोधार्थी

श्रीमती मौसमी वैष्णव

षोध निर्देषक

डॉ.सुनील कुमार श्रीवास्तव

सा.प्राध्यापक (वाणिज्य विभाग)

श्री शंकराचार्य महाविद्यालय जुनवानी दुर्ग

सार : बुनियादी ढाँचे पर विचार–विमर्श के ऐतिहासिक विवरण से यह ज्ञात होता है, कि जी 20 या 20 के समूह ने एक बार फिर बुनियादी ढाँचे को आर्थिक समृद्धि के प्रमुख चालक के रुप में मान्यता दी है। गुणवत्तापूर्ण बुनियादी ढाँचे हेतु हाल ही के जी 20 प्रेसीडेंसी में बुनियादी ढाँचे के निवेश और विकास के कार्यो को आगे बढ़ाने तथा विकसित करने की पहल की गई है। इसके अतिरिक्त जी 20 प्रेसीडेंसी में डेटा अंतराल तथा बुनियादी ढाँचे के निवेश हेतु मजबूत डेटाबिस बनाने की आवश्यकता पर भी विचार–विमर्श किया गया है। किसी भी विकासशील देशो का विकास उस देश के बुनियादी ढाँचे पर निर्भर करती है। जी 20 बुनियादी ढाँचे हेतु निवेश व प्रगति संबंधी कार्यो को करने हेतु पहल करता है। इस शोध पत्र के अध्ययन से यह ज्ञात होता है कि देश के विकास एवं प्रगति हेतु, बुनियादी ढाँचा का मजबूत होना आवश्यक है।

कुंजी षब्द : आर्थिक विकास वैश्विक अर्थव्यवस्था, बुनियादी ढाँचा, निवेश एवं प्रगति

जी 20 का परिचय–

1970, 1980 और 1990 के दशक के शुरुआती दौर में अधिकांश वैश्विक आर्थिक समस्याओं को संबोधित करने के लिए देशो ने जी 5 या बाद में जी 7 जैसे अपने समूह बनाए गए थे। हालाँकि 1997 के मध्य में एशियाई वित्तीय संकट जो थाईलैंड से शुरु हुआ, वह अगले दो वर्षो में तीव्र हो गया और अन्य महत्वपूर्ण एशियाई अर्थव्यवस्थाओं, रुस और लैटिन अमेरिका तक फैल गया।

जी 20 की स्थापना– जी 20 की स्थापना 1999 में एशियाई संकट के बाद वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंक के गवर्नरों के लिए वैश्विक आर्थिक और वित्तीय मुद्दो पर चर्चा करने के लिए मंच के रुप में की गई थी। 2007 के वैश्विक आर्थिक और वित्तिय संकट को देखते हुए जी 20 को राष्ट्र अध्यक्षों के स्तर तक विकास किया गया था और 2009 में इसे ''अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक सहयोग हेतु प्रमुख मंच'' के रुप में नामित किया गया था। जी 20 शिखर सम्मेलन प्रतिवर्ष एक श्रमिक अध्यक्षता में आयोजित किया जाता है।

जी 20 के सदस्य– बीस के समूह (जी 20) में 19 देश (अर्जेटीना, ऑस्ट्रेलिया, ब्राजील कनाडा, चीन, फ्रांस, जर्मनी, भारत, इंडोनेशिया, इटली, जापान, कोरिया गणराज्य, मैक्सिको रुस, सऊदी अरब, दक्षिण अफ्रीका, तुर्किय यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका) और दो क्षेत्रीय निकाय जी 20 सदस्य वैश्विक सकल घरेलू उत्पाद का लगभग 85: वैश्विक व्यापार का 75% से अधिक और दुनिया की आबादी का लगभग दो तिहाई प्रतिनिधित्व करते है।

जी 20 का कार्यक्षेत्र–

जी 20 विकसित तथा विकासशील दोनो तरह के बीस प्रमुख अर्थव्यवस्थाओं का एक समूह है, जो अंतर्राष्ट्रीय आर्थिक नीति पर चर्चा और समन्वय करने के लिए एक साथ आते है।

जी 20 के प्रमुख कार्य–

आर्थिक नीति समन्वय :

- जी 20 सदस्य देशो के लिए आर्थिक नीतियों पर चर्चा और समन्वय करने के लिए एक मंच के रुप में कार्य करता है। यह समन्वय मुद्रा युद्ध, व्यापार तथा अन्य कार्यवाहियों को रोकने में मदद करता है।
- 2008 के वित्तीय संकट के समय जी 20 ने वैश्विक अर्थव्यवस्था को स्थिर करने के लिए तथा वित्तीय क्षेत्रों के सुधारो के समन्वय में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।
- **वित्तीय स्थिरता–** जी 20 बैंकिग नियमों सीमा पर वित्तीय प्रवाह और वित्तीय संस्थानो की निगरानी जैसे महत्वपूर्ण विषयों को संबोधित करके वित्तीय स्थिरता को बढ़ावा देता है।
- जी 20 वैश्विक वित्तीय प्रणाली की स्थिरता की निगरानी तथा सिफारिशें करने के लिए वित्तीय स्थिरता बोर्ड (एफएसबी) की स्थापना की।

व्यापार और निवेष : जी 20 के एजेंडे का केन्द्र बिन्दु व्यापार और निवेश है। जी 20 के सदस्य निष्पक्ष व्यापार को विकसित करने, व्यापार की बाधाओं को कम करने तथा निवेश को सुविधाजनक बनाने की दिशा में काम करते है।

विकासषील देषो के आर्थिक विकास में जी 20 का योगदान–

जी 20 एक प्रभावशाली अंतर्राष्ट्रीय मंच है जो वैश्विक आर्थिक और वित्तीय स्थिरता और सतत् विकास को बढ़ावा देता है। भारत एक महत्वपूर्ण उभरती हुई अर्थव्यवस्था है। जिसमे जी 20 महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारत की अध्यक्षता में शिखर सम्मेलन एक एतेहासिक सफलता थी। सम्मेलन में नई वैश्विक पहल शुरु की गई, जो वैशिक परिदृश्य को बदल देगी। जी 20 शिखर सम्मेलन के परिणाम कुछ इस प्रकार हैः–

कृषि एवं खाद्य सुरक्षा– जी 20 नेताओ ने वैश्विक खाद्य सुरक्षा, पोषण में सुधार, खाद्य प्रणालियों की स्थिरता बढ़ाने की चुनौती का समाधान करने के लिए प्रतिबद्धता जताई है।

डिजिटलीकरण और नवाचार– डिजिटल परिवर्तन अर्थ व्यवस्थाओं और समाजों को नया आकार प्रदान कर रहा है। ओईसीडी डिजिटल प्रौद्योगिकियों द्वारा पेश किए गए अवसरों का लाभ उठाने और नवाचार को प्रोत्साहित करने हेतु जी 20 का समर्थन कर रहा है।

वैश्विक जैव ईंधन गठबंधन (जीबीए) भारत के मौजूदा जैव ईंधन कार्यक्रमों जैसे पीएम जीवन योजना सतत् और गोबरधन योजना में तेजी लाने में सहायता प्रदान करेगा।

अफ्रीकी संघ की स्वीकृति– जी 20 नेता अफ्रीकी संघ को जी 20 के स्थायी सदस्य के रुप में स्वीकार करने हेतु सहमत हुए, जो मंच में विकासशील देशो के आर्थिक विकास का प्रतिनिधित्व बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

भारत के आर्थिक विकास में जी 20 का योगदान–

1 दिसम्बर 2022 को प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र दामोदर दास मोदी जी ने बाली में अपने इंडोनेशियाई समकक्ष से एक वर्ष के लिए जी 20 की अध्यक्षता का कार्यभार संभाला था। जी 20 भारत देश के लिए विशेष रुप से महत्वपूर्ण है, जिसे संस्कृत में '' उत्सवधार्मिता'' के रुप में जाना जाता है।

- भारत 1999 में एक संस्थापक सदस्य के रुप में जी 20 राष्ट्रों में शामिल हुआ और पिछले कुछ वर्षो में ही इसकी भागीदारी का महत्व बढ़ गया है। वर्तमान में भारत की अर्थव्यवस्था 6–7: की औसत दर से बढ़ रही है, जिससे भारत विश्व की तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक बन गई है।
- भारत सरकार ने विदेशी निवेश को आकर्षित करने, बुनियादी ढाँचे में सुधार और उद्यमिता को बढ़ावा देने हेतु आर्थिक सुधारों की एक श्रृंखला लागू की है।
- भारत विश्व व्यापार संगठन का भी सदस्य है। कृषि, सेवाओं और भौतिक सम्पदा अधिकारों जैसे विभिन्न व्यापारिक विषयों में शामिल रहा है। भारत इन विषयों में अपने अनुभव का उपयोग जी 20 में चर्चा में योगदान हेतु तथा निष्पक्ष व्यापार प्रणाली को बढ़ावा देने के लिए कर सकता है।

आर्थिक विकास में बुनियादी ढाँचे की भूमिका– बुनियादी ढाँचे का सीधा संबंध कृषि, उद्योग व्यापार आदि जैसे महत्वपूर्ण उत्पादन क्षेत्रों की आवश्यकता से है। किसी भी देश का आर्थिक और सामाजिक विकास उस देश के बुनियादी ढाँचे पर निर्भर होती है। कई विकसित व विकासशील देश आर्थिक और सामाजिक बुनियादी ढाँचे की भारी वृद्धि के कारण अधिक प्रगति कर रहे है। किसी भी देश का एक अच्छा बुनियादी ढाँचा कार्य प्रक्रिया को आसान बनाता है, जिसके परिणामस्वरुप सकारात्मक और उच्च उत्पादन होता है।

बुनियादी ढाँचा आर्थिक विकास को बढ़ावा देता है–

1) बिजली, पानी, परिवहन आदि जैसे बुनियादी ढाँचा क्षेत्र के उत्पादन का उपयोग सीधे उत्पादक क्षेत्रो में उत्पादन हेतु किया जाता है।
2) परिवहन जैसे बुनियादी ढाँचे से उत्पादकता में अधिक सुधार व विकास होता है।
3) आधुनिक तकनीक के निर्माण में बुनियादी ढाँचा अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह देश को नई तकनीक की कुंजी प्रदान करता है।
4) बुनियादी ढाँचे के स्टॉक में एक प्रतिशत (1:) की वृद्धि तथा प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद में एक प्रतिशत (1:) की वृद्धि से जुड़ा हुआ है।

जी 20 पहल के अंतर्गत आने वाले कार्यो में बाधाएँ

जी 20 में वैश्विक आर्थिक और वित्तीय मुद्दों को संबोधित करता है। निवेश तथा बुनियादी ढाँचे के कार्यो को क्रियान्वित करता है। एक सफल या विकसित देश का आधार उस देश का बुनियादी ढाँचा होता है। जी 20 पहल में देश के बुनियादी ढाँचा हेतु विभिन्न विषयों पर चर्चा की गई है। कुछ चुनौतियां देश के आर्थिक व सामाजिक विकास में बाधा उत्पन्न करती है तथा ये चुनौतियाँ बुनियादी ढाँचा के विकास में रुकावटे पैदा करती है। कुछ प्रमुख समस्याएँ इस प्रकार है–

मुख्य निर्धारण बनाम पर्यावरण– आधुनिक आईटी प्रबंधको के लिए सबसे बड़ी चुनौती सुविधा चलाने की लागत को कम करना है। मूल्य निर्धारण संरचना अधिकांशतः प्रत्येक कम्पनी के लिए एक कठिन कार्य होता है। इसके अंतर्गत उन अनुप्रयोगों को चरणबद्ध किया जाता है, जिनका उपयोग कम से कम हो, या जिनके विकल्प मितव्ययी हो।

सेवा स्तर समझौते– आईटी प्रबंधन में विश्वसनीयता एक प्रमुख समस्या है, हमे ज्ञात है कि, प्रौद्योगिकी की शुरुआत से ही यह समस्या बनी हुई है। यह समझौता सीधे ग्राहक तथा ग्राहक संतुष्टि से संबंधित है, क्योंकि सेवा में कोई भी बाधा या कमी जो बुनियादी ढांचे का परिणाम है असंतुष्ट ग्राहकों को जन्म दे सकता है और असंतुष्ट ग्राहक अपने व्यवसाय के लिए अन्य विकल्प की ओर से जाना चाहेंगे।

साइबर हमलो और सुरक्षा उल्लंघनो में वृद्धि–

साइबर हमलो का उद्देश्य गोपनीय जानकारी चुराने से लेकर महत्वपूर्ण बुनियादी ढाँचा को बाधित करना और ऑनलाइन फिरौती मांगने जैसा कुछ भी हो सकता है। नई टेक्नोलॉजी के विकास के साथ–साथ ऑनलाइन फिरौती माँगने जैसा कुछ भी हो सकता है। नई टेक्लोलॉजी के विकास के साथ–साथ ऑनलाइन की जाने वाले उल्लंघन व हमले भी बढ़ने लगे है।

निष्कर्ष–

जी 20 ने निः संदेह बुनियादी ढांचे के विकास के सभी पहलुओं पर विचार–विमर्श करके बुनियादी ढाँचे के विकास को प्रोत्साहित करने में बहुत बड़ा योगदान दिया है। जी 20 का योगदान प्रत्येक क्षेत्र में जैसे निवेश हो, वित्त हो, स्थानीय मुद्रा बांड बाजार का विकास हो, क्षमता निर्माण, परियोजना पाइप लाइन की पहचान आदि शामिल है। विकासशील देशो के आर्थिक विकास में बुनियादी ढाँचा केन्द्र बिन्दु है। उपयुक्त अध्ययन से हमे यह ज्ञात होता है कि जी 20 कार्यो के अंतर्गत आर्थिक विकास से संबंधित सभी एंजेडे पर विचार–विमर्श किया जाता है। यह शोध पत्र यह दर्शाता है कि जी 20 एजेंडे में कार्यो को सम्पादित करने में विभिन्न समस्याएँ आती है, जिनका निराकरण किया जाना आवश्यक है।

अतः प्रस्तुत शोध पत्र यह दर्शाता है कि जी 20 हमारे अंतर्राष्ट्रीय विकास एवं सहयोग का प्रमुख मंच है जी 20 का यह मंच समस्त आर्थिक विषयो पर रचनात्मक चर्चा को बढ़ावा देता है एवं सभी प्रमुख आर्थिक स्थिरता से संबंधित महत्वपूर्ण मुद्दो पर औद्योगिक और अंतर्राष्ट्रिय आर्थिक विषयो पर वैश्विक वास्तुकला और शासन के आकार देने और मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

–:: संदर्भ ग्रंथ सूची ::–

- जी 20 2008–20 का समूह– एक इतिहास www.g20.utoronto.ca.
- जी 20 2015 ऐतिहासिक अवलोकन। www.g20germany.de.
- जी 20 एफ एम और सीबीजी विज्ञप्ति 20013 अक्टूबर 10–1.जी20 के वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंक गवर्नरों की विज्ञप्ति, वाशिंगटन ।
- जी 20 एफएम और सीबीजी विज्ञप्ति 14 सितंबर 20–21,2014। जी20, केर्न्स के वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंक गवर्नरों की विज्ञप्ति।
- जी 20 एफएम और सीबीजी विज्ञप्ति 2016 जुलाई 24। जी 20, चेंगदू, चीन के वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंक गवर्नरों की विज्ञप्ति।
- जी 20 हैम्बर्ग कार्य योजना। 2017 जुलाई 8, हैम्बर्ग,जर्मनी।
- जी 20 एफएम और सीबीजी विज्ञप्ति 2020 अक्टूबर 20 के वित्त मंत्रियों और केंद्रीय बैंक गवर्नरों की विज्ञप्ति, वर्चुअल मीट।
- ग्लोबल इंफ्रास्ट्रक्चर हब (जीआईएच) 2018 इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट के लिए जी20 सिद्धांत तैयारी चरण इंफ्रास्ट्रक्चर वर्किंग ग्रुप द्वारा तैयार किया गया।
- जीआईएच 2021 दिसंबर इंफ्रास्ट्रक्चर मॉनिटर।
- g20.org/hi/about-g20/
- google.com/amp/s/hi.
- https://www.oecd.org.